'जहाजिन' उपन्यास : एक गिरमिटिया महिला की संघर्षकथा

डॉ॰ मुन्नालाल गुप्ता
सहायक प्रोफेसर
प्रवासन एवं डायस्पोरा अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

इंडो कैरेबियन महिलाओं का लेखन उत्तर उपनिवेशवाद के आगमन के साथ-साथ उभरा। ब्रिटेन, उत्तरी अमेरिका के दक्षिण एशियाई और कैरेबियन के पुरुष लेखकों ने साहित्य के क्षेत्र में महिला लेखकों के योगदान पर मुश्किल से ध्यान दिया। वी॰एस॰ नायपॉल, डेविड डाबीदीन, सैम सेल्वन, नील बिसूनडनाथ जैसे भारतीय मूल के पुरुष लेखकों ने कैरेबियन साहित्यिक क्षेत्र में लिखा और स्थापित हुए जबकि महिला लेखकों की रचनाएँ उपेक्षित और अस्पष्ट रहीं। त्रिनिदाद और टोबैगो, गुयाना, फिजी, सूरीनाम और मॉरीशस की महिला लेखकों द्वारा गिरमिटिया इतिहास के साथ-साथ कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य किए गए और संग्रह संकलन और लेखन कर प्रकाशित भी किए थे। इन साहित्यिक कृतियों ने उन्हें अपनी राय व्यक्त करने, अपने अनुभवों को साझा करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जो कई वर्षों तक चुप थे। ऐसे उल्लेखनीय लेखकों और आलोचकों में रमाबाई एस्पिनेट, पेट्रीसिया मोहम्मद, रोसाने कन्हाई, पेग्गी मोहन, गोएत्रा बहादुर आदि ने अपने साहित्य को प्रकाशित किया। साहित्य में इंडो कैरेबियन महिलाओं का चित्रण मुख्य रूप से एक पुरुष लेखन के माध्यम से हुआ जिसने उन्हें परिवार की इकाई के भीतर तक सीमित कर दिया था। एक स्वतंत्र महिला के विचार, सवाल जो औपनिवेशिक साहित्य में कभी नहीं दिखाई दिए, जिसे उत्तर औपनिवेशिककाल की उभरती हुई महिला लेखकों द्वारा उठाया गया।

साहित्यिक कथाओं में नारी को प्रदान की गई लघु प्रतिनिधित्व को कई महिला लेखकों और विद्वानों जैसे रमाबाई एस्पिनेट, पैगी मोहन, गौइत्रा बहादुर, पेट्रीसिया मोहम्मद, वृंदा मेहता, ब्रिजेट बेरेटन, रोडा रेडडोक आदि ने चुनौती दी है। इन इंडो-कैरेबियन महिला साहित्यकारों और विद्वानों ने अपने कार्यों और लेखन के माध्यम से एक नारी को नई अभिव्यक्ति और प्रतिनिधित्व दिया रमाबाई एस्पिनेट (1989) ने अपने निबंध 'द इनविजिबल वुमन इन द वेस्ट इंडियन फिक्शन' में कहा है कि कैरेबियन में मौजूद भारतीय महिला आज कैरेबियन से बहुत अलग है, जो उनकी अभिव्यक्ति में दिखाई देती है। वह अन्य मनुष्यों की तरह विविध और जटिल है और जिसमें असुरक्षा, भय, इच्छा, और जुनून पुरुषों के बराबर है। आज कैरेबियन की महिला लेखक अपनी विशिष्ट वास्तविकताओं के अनुसार अपने को फिर से प्रस्तुत कर रही हैं। (वृंदा मेहता, 2014)

इंडो कैरेबियन महिला लेखकों के साहित्यिक कृतियों का अवलोकन करते समय कोई भी आसानी से काला पानी (मिश्रा, 2007, पृ॰ 77) पगला समुंदर (महाबीर, 1985, पृ॰ 52) को पार करने, जहाजी संबंध, बागानों में जीवन आदि जैसी विषयगत समानताओं को देख सकता है। वे अक्सर भारत से अपने पूर्वजों के विस्थापन के बारे में बात करते हैं जिन्होंने नई जगह में पुनः

जीवन पाने और बसने का संघर्ष किया है। इस प्रकार उनके लिए स्वदेश उनके आम जीवन, संवेदनाओं और जीवन के लोकाचार में प्रतिध्वनित होता है। परिणामस्वरूप इन प्रवासित लोगों ने समुद्रपारीय देशों में नए वातावरण के अनुसार अपने को अनुकूलित किया। एक समुदाय का पुनर्निर्माण किया जिसमें पुरातन के साथ-साथ नए मूल्यों के चिह्न हों और जो उन्हें एक मिश्रित सांस्कृतिक पहचान देता हो। इंडो कैरेबियन के लेखकों द्वारा रचित साहित्यिक कृतियों से उनके पूर्वजों और उनकी विलुप्त पहचान से संबंधित सामाजिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का पता चलता है। उनके आख्यान/ वृत्तांत ग्रामीण और शहरी डायस्पोरा और दो पीढ़ियों द्वारा आत्मसात किए गए विश्वासों और आदर्शों के बीच के अंतर से भरे हुए हैं। इन गिरमिट श्रमिकों के अनुभव से ही 'गिरमिट वैचारिकी'/गिरमिट आइडियोलॉजी (मिश्रा, 2007, पृ॰ 22) सामने आती है।

पेग्गी मोहन का जन्म कैरेबियन क्षेत्र के त्रिनिदाद में हुआ। इनके पूर्वज गिरमिटिया श्रमिक के रूप में त्रिनिदाद गए थे। इन्होंने बी॰ए॰ वेस्ट इंडिज विश्वविद्यालय, संत अगस्टिन, त्रिनिदाद से पीएच॰डी॰ मिसीगन विश्वविद्यालय से त्रिनिदाद भोजपुरी पर किया। त्रिनिदाद भोजपुरी अधिकांश त्रिनिदाद के भारतीय लोगों की लिंगुआ-फ्रेंका (बोलचाल की भाषा) है परंतु आज इस भाषा की स्थिति अच्छी नहीं है। इसका संघर्षण हो रहा है तथा यह मरणासन्न है। (एन॰ जयराम, 2004) पेग्गी मोहन ने 2007 में 'जहाजिन' नामक उपन्यास लिखा जिसे हर्पर कालिंस इंडिया लिमिटेड द्वारा 2008 में प्रकाशित किया गया। 'जहाजिन' उपन्यास को लिखने के लिए पेग्गी मोहन ने मुख्यत: दो प्रविधियों का प्रयोग किया है, वे हैं–'मौखिक इतिहास प्रविधि' और 'मारियान्ने हिर्स्च (2008) की 'पोस्ट मेमोरी' (यादोत्तर विधि) या 'विलेटेड मेमोरी (विलंबित याद)। पेग्गी मोहन ने इन दोनों विधियों का प्रयोग करके भारतीय अनुबंध प्रणाली के तहत त्रिनिदाद जानेवाले भारतीयों खासकर महिलाओं के पुरुष प्रधान समाज में संघर्ष, इतिहास, उनके अनुभव, मानसिक सदमा आदि को एक्कीसवीं सदी के पाठकों के लिए फिक्सन/उपन्यास के रूप में 'जहाजिन' में उकेरने का सफल प्रयास किया है। इस उपन्यास में भारतीय प्रवासन, ऊबा-थका देनेवाली लंबी समुद्री यात्रा, जहाज पर रिश्तों का बनना तथा अलग-अलग गन्ना बागानों में जाने के कारण बिछड़ना, मानसिक पीड़ा, पहचान के लिए संघर्ष आदि अलग-अलग कहानियों के माध्यम से अनुबंधित श्रमिकों के पूरे जीवन अनुभव को फिक्शन के रूप में उभारा है। इस उपन्यास में भारतीय मिथक, कहानियाँ, लोककथाएँ, लोकगीत, भारतीय भाषा आदि का भारतीय परिवेश और कैरेबियन क्षेत्र के देशों में जाने के बाद उनमें किस प्रकार के परिवर्तन हुए, आदि की विस्तृत चर्चा की गई है।

अनुबंधित/ गिरमिटिया के इतिहास के माध्यम से भारत और त्रिनिदाद को जोड़ने वाले विचार पेगी मोहन के 'जहाजिन' उपन्यास (2007) में यह बहुत स्पष्ट रूप से उद्घाटित हुआ है। 'जहाजिन' की कथाकार एक भाषाविद् हैं जो त्रिनिदाद में भारतीय समुदाय के बीच व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली भोजपुरी की पुरानी और आज मृतप्राय होती जा रही भाषा पर शोध करती हैं। भाषा के बारे में अधिक जानने के लिए कथाकार दीदा का गहन साक्षात्कार/ मौखिक इतिहास की प्रविधि का प्रयोग करते हुए कहती हैं। दीदा, एक बुजुर्ग जहाजिन है, जिसने एक अकेली महिला के रूप में काला पानी (पेगी मोहन, 2007, पृ॰ 82) को पार कर लिया है। पेग्गी मोहन महिलाओं या जहाजी बहनों के इतिहास का अध्ययन करती हैं, जिन्होंने पारिवारिक कर्त्तव्य और सामाजिक प्रतिबंधात्मक बंधनों को लाँघते हुए एक महिला के रूप में काला पानी या

अटलांटिक महासागर को पार कर लिया है। (पीर भाई, 2003) दीदा, जहाजी बहन के रूप में वे एकल महिलाओं के प्रवासन के लिए अग्रदूत थीं और उपन्यास की कथा में उन महिलाओं की भूमिका की चर्चा की गई है जिन्होंने उपनिवेशवाद और प्रवासन के प्रभावों के तहत एक समुदाय के रूप में स्वयं को संगठित किया। (एलिसन क्लेन, 2016) कथा में भर्ती की प्रक्रिया, उनकी आगे की यात्रा और सदियों से महिलाओं के अनुभवों को 'जहाजिन' में विस्तृत रूप से दिया गया है। इस उपन्यास की कथा का केंद्रीय चरित्र है दीदा तथा उसकी न थकनेवाली ताकत और संकल्प जिसके कारण उसने जहाज की लंबी और भयावह यात्रा को सफलतापूर्वक पूरा किया और परदेश के गन्ना बागान में संघर्षपूर्ण जीवन जिया।

दीदा, कथाकार की दादी सुन्नरिया (पेग्गी मोहन, 2007, पृ॰ 26) के साथ उसी जहाज में कैरेबियन आई है। बूढ़ी औरत अतीत की विविध यादों को याद करती है जिसे कथाकार द्वारा रिकॉर्ड किया जाता है और इसी मौखिक वृत्तांत से इस क्षेत्र में पुराने भारतवंशी समुदायों द्वारा बोली जानेवाली भाषा की भाषाई विशेषता और उनके पूर्वजों के जीवन का विश्लेषण किया जाता है। दीदा, अपने चार साल के बेटे कल्लू के साथ भारत के बस्ती से अपने गाँव को छोड़ने की बात बताती है ताकि गाँव को प्रभावित करने वाले अकाल से बचा जा सके। उसने फैजाबाद शहर की यात्रा की, जहाँ वह अरकाटिन महिला भर्तीकर्ता से मिली, जिसने उसे चीनी बागान या चीनीदाद (पेग्गी मोहन, 2007, पृ॰ 18) में काम खोजने और अगर उसने पंजीकृत किया तो उसे अग्रिम राशि भी प्राप्त होगी, की पेशकश की। दीदा को अनुबंध के केवल एक साल तक चलने की गलत सूचना दी गई और बताया गया कि अनुबंध के बाद में उसे बहुत सारे पैसे के साथ भारत वापस भेज दिया जाएगा। अन्य पुरुषों और महिलाओं के साथ, दीदा ने भी कैरेबियन में काम करने की इच्छा जताते हुए अनुबंध पर हस्ताक्षर कर दिए।

दोनों महासागरों के पार की यात्रा का मजदूरों के जीवन पर बहुत ही नकारात्मक प्रभाव पड़ा। उनकी खोई हुई मातृभूमि के लिए लालसा और घर वापसी की तीव्र इच्छा (ब्राह, 1996, पृ॰ 180) ने प्रवासितों के अंदर मातृभूमि लिए अत्यधिक आत्म-सजगता को पैदा करता है। लंबी और कठिन यात्रा द्वारा काला पानी को पार करने के कारण जाति व्यवस्था मिट गई। विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के लोग भारी मानसून के दौरान कोलकाता से गोदावरी पोत (पेग्गी मोहन, 2007, पृ॰ 52) पर सवार हुए। उनमें से अधिकांश निचली जाति से संबंधित थे जबकि उच्च जातियों से बहुत कम लोग थे। यह एक हिंदू मान्यता थी कि समुद्र के काला पानी को पार करने से एक व्यक्ति बहिष्कृत जाति में बदल जाएगा, परंतु अब समुद्री जहाज में सवार सभी लोगों ने काला पानी को पार करते हुए सदियों पुराने मिथक को तोड़ दिया। अब वे अपने जीवन के बाकी हिस्सों को सुदूर देश में जीने के लिए नियत थे और अब वे मानते हैं कि वे अपने मातृभूमि कभी वापस नहीं जा सकेंगे, और वे परदेश में ही मरेंगे। (पेग्गी मोहन, 2007) भर्ती किए गए लोग लंबी समुद्रीयात्रा और गंतव्य देशों के कार्य की प्रकृति से अनजान थे। समुद्री यात्रा के दौरान अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों ने महामारी का प्रसार किया, जिसके कारण जहाज में कई लोगों की मौत हो गई। फिर भी इन लोगों ने जहाज पर अपने सुख-दु:ख को बाँटने के लिए कुछ रिश्ते बनाए जिसे जहाजी भाई/ जहाजी बहिन (मिश्रा, 2007, पृ॰ 77) के नाम से संबोधित किया और इस रिश्तेदारी के कारण कठिन समय में वे एक-दूसरे के लिए खड़े रहे। गंतव्य देशों में भी यह रिश्ता जीवनभर तक चलता रहा और उनकी पीढ़ियों तक ने इस रिश्ते को निभाया और सम्मान दिया।

भर्ती किए गए लोगों को गिरमिटिया या कुली कहा जाता था। यह इन्हें दासों के समान सामाजिक स्थिति प्रदान करता था। मॉरिशियन लेखक खान टोराबुली (2002) ने इनके लिए कूलिट्यूड शब्द गढ़ा है और यह नेग्रिट्यूड शब्द के साथ घनिष्ठ रूप से संबंधित है। आसपास काम करनेवाले सभी भारतीय मजदूर रात में एक साथ इकट्ठा होते थे और आग के चारों ओर खुशी से अपने गाँव समाज के लोकगीतों को गाते और नृत्य करते। इसे 'बैठका' कहा जाता था और गाए जानेवाले लोकगीतों को 'बैठका गीत' कहा जाता था। यह बैठका गिरमिटया भारतीयों की प्रारंभिक पाठशाला बनी।

अनुर्बंधित प्रणाली श्रमशोषण का पर्याय बन गया। उन्हें बिना ठीक से पारिश्रमिक भुगतान के ही दिन-रात मेहनत करनी पड़ती थी। नए भर्ती किए गए श्रमिकों को उनकी शारीरिक स्वस्थता (फिटनेस) और क्षमता के आधार पर समूहों में विभाजित किया जाता था। पुरुष गन्ने को काटते और महिलाएँ पत्तियों को हटातीं, उन्हें साफ करतीं और गन्ने का बंडल बनाकर रखतीं। इसके बाद ओवरसियर गन्ने को वजन के लिए ले जाता। श्रमिकों को सुबह से लेकर शाम तक तीखी धूप में काम करना पड़ता और काम के दौरान कई श्रमिक भूख और प्यास के कारण मूर्च्छित होकर गिर जाते। इसके वाबजूद उन्हें काम के दौरान आराम लेने से मनाही थी। इस कठिन परिस्थिति में काम करने के साथ-साथ बागान के ओवरसियर के गुस्से का प्रकोप भी श्रमिकों को सहना पड़ता था। (पेग्गी मोहन, 2007, पृ॰ 124)श्रमिकों के मन की एक मुख्य चिंता डेंगू और मलेरिया जैसी महामारियों का प्रसार था। गन्ने के खेत, अव्यवस्थित बैरक और उसके आस-पास के स्थान मच्छरों के वृद्धि के लिए उपयुक्त थे। बड़े पैमाने पर कई मजदूर और बच्चे संक्रामक बीमारियों और बुखार से पीड़ित थे, जो श्रमिक किसी भी कारण से अपने काम से चूक जाते थे, उन्हें मजदूरी का भुगतान नहीं जाता था और अंततः उन्हें सजा के लिए जेल भेजा जाता था। राशन बहुत कम दिया जाता था, इस कारण कई लोग भूखे रहकर काम करने को विवश थे जिसके परिणामस्वरूप दुर्घटनाएँ अधिक होती थी। पर्याप्त सुविधाओं की कमी के कारण श्रमिकों के बीच महामारी के प्रकोप ने कई लोगों की जान ले ली।

'जहाजिन' उपन्यास में करीबियाई क्षेत्रों के गन्ना बागानों में काम करनेवाली महिला मजदूरों की दुर्दशा का विशेष रूप से विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। उन्हें शारीरिक श्रम की कठिनाइयों को सहन करने के साथ-साथ और गन्ना बागानों में यौन-आक्रमण/ शोषण से खुद को बचाना पड़ता था। (शेपर्ड, 2002) घरेलू हिंसा, असमान मजदूरी वितरण आदि ने उनके दुख को और अधिक बढ़ा दिया था। इस उपन्यास में ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ सुन्नरिया या कथाकार की दादी को काम वाले क्षेत्र में औपनिवेशिक ओवरसियर के दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ता था। बागान में काम करनेवाली कई महिला मजदूरों का भी यही हाल था। उपन्यास 'कुली वूमेन': एक ओडिसी (2013) में गौइत्रा बहादुर ने काम के क्षेत्रों में ओवरसियरों द्वारा किए जा रहे महिला श्रमिकों के शोषण, उत्पीड़न आदि से संबंधित अनुभवों को साझा किया है जिन्हें साम्राज्यवादी शासकों द्वारा बढ़ावा दिया जाता है। ऐसे अनगिनत मामले दर्ज किए गए जहाँ यौन-शोषण के लिए ओवरसियरों द्वारा कुली बैरकों से महिलाओं का अपहरण कर लिया जाता था।

एम॰ पिरभाई (2013) का जाहाजी भाई-बहिन की अवधारणा की उपस्थिति 'जहाजिन' उपन्यास की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। दीदा का चरित्र 'जहाजिन' के रूप में या जहाज की बहन के रूप में एक प्रमुख की बन जाती है क्योंकि वह भयावह और अनिश्चित समुद्री-यात्रा के

दौरान और अनुबंधित/अनुबंधित श्रमिक के रूप में विदेश जानेवाली महिला मजदूरों लिए एक मजबूत स्तंभ की तरह काम करती है। दीदा, पुरानी पीढ़ी की एकमात्र महिला है जो अनुबंधित/अनुबंधित श्रमिक प्रवासन और उपनिवेशीकरण के दूरगामी नकारात्मक प्रभावों का सही-सही विवरण अपने मौखिक वृत्तांत के द्वारा देती है। वह यह भी बता सकती है कि नई परिवेश और परिस्थिति में श्रमिक महिलाओं ने एक समुदाय, समाज का गठन और परिवार की बुनावट जिसे उन्होंने मातृभूमि हिंदुस्तान के अपने गाँवों में छोड़ दिया था, को कैसे और किन परिस्थितियों से गुजरकर पुनः रचा। कई जहाजिनों के जीवन में दीदा की अहम भूमिका है। जब जहाज उबड़-खाबड़ समुद्र से गुजर रहा था और गर्भवती रामदाय (पेग्गी मोहन, 2007, पृ॰ 18), जहाज में एक बच्चे को जन्म देनेवाली थी तो इस कार्य में दीदा ने गर्भवती रामदाय की हिम्मत बढ़ाई और बच्चे को जन्म देने में मदद की। जाहाजी बहिन की अवधारणा ने सभी रंग, जाति की महिलाओं को एक ओर नजदीक लाकर उन्हें पारिवारिक एकता की भावना बँधाई तो दूसरी ओर उन्हें किसी भी प्रकार के शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध का साहस प्रदान किया। (एम॰ पिरभाई, 2013, पृ॰ 51)

अपनी मातृभूमि को लौटने की असंभावना भी उपन्यास का महत्त्वपूर्ण विषय है। स्वदेश वापसी की यात्रा उनके लिए बड़ा सवाल नहीं था क्योंकि उनके कार्यकाल की समाप्ति के बाद उन्हें मुफ्त वापसी की पेशकश की गई थी, लेकिन बहुत कम लोग थे जो भारत लौटे। काला पानी को पार करने के बाद अपनी जाति को खोने का विश्वास कई लोगों को लौटने से डराता है और इस कड़ी में सबसे कमजोर महिलाएँ थीं क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं उन्हें समाज से बहिष्कृत न कर दिया जाए और अगर वे लौट गईं तो भी उन्हें बहुत ही दयनीय परिस्थितियों में रहना पड़ेगा। उपन्यास में एक उदाहरण है जब मुकून सिंह (पेग्गी मोहन, 2007, पृ॰ 187) दीदा को भारत वापस जाने की यात्रा पर उन्हें साथ जाने के लिए कहते हैं, तो उन्होंने उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया क्योंकि उन्हें पता था कि दो अलग-अलग जातियों के लोग भारत में एक साथ शांतिपूर्ण जीवन नहीं जी सकते हैं और ऐसे लोगों को भी समाज द्वारा त्याग दिया जाएगा और उन्हें अपना शेष जीवन बहिष्कृत के रूप में ही जीना होगा। उसने सोचा कि त्रिनिदाद में उसका जीवन बेहतर होगा क्योंकि वह भारत के विपरीत अपने जीवन को नियंत्रित नहीं कर सकती है जहाँ एक महिला को पितृसत्तात्मक समाज के भीतर निषिद्ध और प्रतिबंधित किया जाता है ।

उपन्यास में अनुबंधित प्रणाली के भोगे हुए यथार्थ के वृत्तांत को और लोगों के जीवन पर इसके परिणामों का एक सच्चा वर्णन है। एक बुजुर्ग जहाजिन के साथ एक वास्तविक साक्षात्कार के आधार पर, पैगी मोहन तत्कालीन उपनिवेश की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर एक तथ्यात्मक विवरण प्रदान करती हैं जिसके कारण अनुबंधित प्रणाली का उदय हुआ और कैसे लोगों को अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के लिए भर्तीकर्ताओं द्वारा आकर्षित किया गया, जिसने उनके जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया। ये महिला लेखक प्रभावी रूप से अपने पूर्वजों के खोए हुए इतिहास का पता लगाती हैं और कैसे उनके पूर्वजों के जनसांख्यिकीय विस्थापन ने उन्हें इंडो-कैरेबियन महिलाओं की यौन, सामाजिक, जातीय और सांस्कृतिक पहचान को एक विउपनिवेशिकरण के परिप्रेक्ष्य में फिर से परिभाषित करने के लिए प्रेरित करती है।

संदर्भ

1. गोएत्रा बहादुर, (2013), कुली वूमेन : द ओडिसी ऑफ इंडेंचर, हैचेट इंडिया
2. कमलकिशोर गोयनका (सं॰), (2015), प्रवासी साहित्य, जोहान्सबर्ग से आगे, विदेश मंत्रालय, भारत

सरकार, दिल्ली
3. ब्रह्म अवतार (1996), कार्टोग्राफीज ऑफ डायस्पोरा, लंदन/न्यूयॉर्क, रूटलेज
4. रमाबाई एस्पिनेट, (1989), द इनविजिबल वुमन इन वेस्ट इंडियन फिक्शन, विश्व साहित्य अँग्रेजी में लिखा गया है, वॉल्यूम 29
5. जॉय महाबीर, पीरभाई मरियम, (2013), क्रिटिकल पर्सपेक्टिव ऑन इंडो-कैरेबियन वोमेनेंस लिटरेचर न्यूयार्क, रूटलेज
6. पेग्गी मोहन, (2007) जहाजिन, हार्पर कोलिन्स प्रिंट, इंडिया
7. वृंदा मेहता, (2004), डायस्पोरिक (डिस) लोकेशंस : कैरेबियन वोमेनरायटर्स निगोसिअट्स काला पानी बातचीत, किंग्स्टन, वेस्ट इंडीज प्रेस यूनिवर्सिटी, जमैका
8. कार्टर मरीना, टोराबुली खान, (2002), कूलिच्यूड, एन एंथोलोगी ऑफ इंडियन लेबर डायस्पोरा, एंथेम साऊथ ईस्ट एशियन स्टडीज
9. रुबेन गौरीचरण, (2020), शिफ्टिंग ट्रांसनेशनल बोंडिंग इन इंडियन डायस्पोरा, टायलर एंड फ्रांसिस, इंडिया
10. विजय मिश्रा, (2007), दी लिटरेचर ऑफ दी इंडियन डायस्पोरा, लंदन एंड न्यूयार्क, रूटलेज
11. करुथ केथी, (1996), अनक्लेम्ड एक्सपेरिएंस: ट्राउमा, नैरेटिव, एंड हिस्टरी, जॉन होपकिंस यूनिवर्सिटी प्रेस, बाल्टीमोर
12. एन॰ जयराम, (2004), दी इंडियन डायस्पोरा : डायनेमिक्स ऑफ माइग्रेशन, सेज पब्लिकेशन इंडिया, नई दिल्ली

प्रवासन एवं डायस्पोरा अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल, पोस्ट: हिंदी विश्वविद्यालय
उमरी, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001
मो॰ 9028226561
mlgbharat@gmail.com